Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.03, No.3, October 2024

बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभाविकता का सहसंबंधात्मक अध्ययन

रेनू बहुखंडी
असिस्टेंट प्रोफेसर,स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय, शाहजहाँपुर

****

शोध-सारांश: *प्रस्तुत शोध पत्र बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9-12) में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी शिक्षण प्रभाविकता के मध्य पाए जाने वाले संबंधों की जाँच करता है। समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षक की भूमिका एक मार्गदर्शक, प्रेरक एवं सुगमकर्ता की हो गई है, जिसके लिए उसका शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभावशीलता अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। यह अध्ययन सहसंबंधात्मक अनुसंधान प्रारूप पर आधारित है। स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुने गए 230 शिक्षकों के नमूने से मानकीकृत प्रश्नावलियों के माध्यम से आँकड़े एकत्र किए गए। शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभाविकता के बीच पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r=0.76) एक उच्च सकारात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक संबंध को दर्शाता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षण की प्रभावशीलता केवल विषय-ज्ञान पर ही नहीं, अपितु शिक्षक के सकारात्मक, सहानुभूतिपूर्ण एवं व्यवस्थित शिक्षण-व्यवहार पर भी निर्भर करती है।*

मुख्य शब्दावली: *शिक्षण-व्यवहार, शिक्षण-प्रभाविकता, सहसंबंधात्मक अध्ययन, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरेली*

****

परिचय

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की आधारशिला है। वर्तमान ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था एवं तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौर में शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष बल दिया जा रहा है। इस गुणवत्ता को निर्धारित करने में शिक्षक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है। आज शिक्षक की भूमिका मात्र ज्ञान के प्रसारक की न रहकर एक मार्गदर्शक, प्रेरक, परामर्शदाता एवं सीखने के वातावरण के सुगमकर्ता की हो गई है (Hattie, 2015)। इन जटिल भूमिकाओं के सफल निर्वहन के लिए शिक्षक का **शिक्षण-व्यवहार** तथा उसकी **प्रभाविकता** दो ऐसे पहलू बन जाते हैं जो न केवल शैक्षणिक उपलब्धि, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को भी गहराई से प्रभावित करते हैं।

शिक्षण-व्यवहार से आशय कक्षा-कक्ष में शिक्षक द्वारा अपनाई जाने वाली उन सभी विधियों, तकनीकों, क्रियाओं, अन्तःक्रियाओं एवं व्यवहारिक शैलियों से है जो विद्यार्थियों के अधिगम प्रक्रिया एवं परिणामों को प्रभावित करती हैं। इसमें पाठ-योजना, प्रस्तुतीकरण कौशल, प्रश्नोत्तरी, कक्षा प्रबंधन, संप्रेषण, प्रौद्योगिकी समायोजन तथा मूल्यांकन की विधियाँ प्रमुख रूप से शामिल हैं (जैन, 2016)। दूसरी ओर, शिक्षक प्रभाविकता एक बहुआयामी अवधारणा है, जो शिक्षक की उस क्षमता का माप है जिसके द्वारा वह अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है। एक प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल, मूल्यों, दृष्टिकोणों एवं व्यवहार में वांछनीय एवं स्थायी परिवर्तन लाने में सक्षम होता है (शर्मा, 2018)।

उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र बरेली शहर है, जहाँ सरकारी, सहायता प्राप्त एवं निजी तीनों प्रकार के अनेक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थित हैं। यह कक्षा 9-12 का वह संवेदनशील चरण है जहाँ विद्यार्थियों का भविष्य निर्धारित होता है। ऐसे में यह जानना अत्यंत प्रासंगिक है कि क्या इन विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के बीच कोई व्यवस्थित संबंध विद्यमान है? क्या शिक्षण की विशिष्ट शैलियाँ एवं व्यवहार (जैसे सहयोगात्मक अधिगम को बढ़ावा देना, प्रौद्योगिकी का उपयोग, लोकतांत्रिक वातावरण) शिक्षक को अधिक प्रभावी

बनाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर खोजना ही इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व

यह शोध निम्नलिखित कारणों से आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है:

- **शिक्षक विकास हेतु:** शोध के निष्कर्ष शिक्षकों को स्व-मूल्यांकन का एक आधार प्रदान करेंगे, जिससे वे अपने शिक्षण व्यवहार के सकारात्मक एवं सुधार योग्य पहलुओं की पहचान कर सकेंगे।
- **विद्यालय प्रबंधन हेतु:** विद्यालय प्रशासकों को शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने, मानव संसाधन नीतियाँ बनाने तथा शिक्षण मूल्यांकन के अधिक वैज्ञानिक मानदंड विकसित करने में सहायता मिलेगी।
- **छात्र कल्याण हेतु:** एक प्रभावी एवं सकारात्मक शिक्षण व्यवहार सीधे तौर पर छात्रों की अधिगम में रुचि, कक्षा में उपस्थिति, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की भावना तथा समग्र शैक्षिक परिणामों को अनुकूलित करता है (Ryan & Deci, 2017)।
- **शैक्षिक नीति निर्माण हेतु:** क्षेत्र-विशिष्ट यह शोध राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा, सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा पाठ्यक्रम विकास से जुड़ी नीतियों को साक्ष्य-आधारित दिशा दे सकता है।
- **सैद्धांतिक महत्त्व:** भारतीय संदर्भ, विशेषकर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभाविकता के संबंधों पर किए गए शोध सीमित हैं। यह अध्ययन इस सैद्धांतिक अंतर को भरने का एक प्रयास है।

शोध के उद्देश्य

1. बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार के वर्तमान स्तर का आकलन करना।
2. उक्त शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविकता के स्तर का आकलन करना।
3. शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के मध्य विद्यमान सहसंबंध का पता लगाना।
4. शिक्षण-व्यवहार में लिंग, शिक्षण अनुभव, विद्यालय के प्रबंधन (सरकारी/निजी) तथा विषय (विज्ञान/कला/वाणिज्य) के आधार पर भिन्नता का अध्ययन करना।
5. शिक्षण प्रभाविकता में उपर्युक्त चरों के आधार पर भिन्नता का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1.बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

2.निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

3.अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की प्रभाविकता, कम अनुभव वाले शिक्षकों की प्रभाविकता में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है।

4.विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विषय के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है

।शोध की सीमाएँ

1. यह अध्ययन केवल बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित है; अतः इसके निष्कर्षों का व्यापक सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता।
2. शोध में केवल स्थायी/नियमित शिक्षकों को ही शामिल किया गया है; अतिथि अध्यापकों को सम्मिलित नहीं किया गया।

3. आँकड़ा संग्रहण के लिए स्व-प्रतिवेदन पर आधारित प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया है, जिसमें सामाजिक वांछनीयता के पक्षपात (Social Desirability Bias) की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

समीक्षित साहित्य

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक के व्यवहार एवं उसकी प्रभावशीलता पर देश-विदेश में पर्याप्त शोध हुए हैं। चौहान (2019) के अध्ययन से पता चला कि माध्यमिक स्तर के अधिकांश शिक्षक अभी भी परम्परागत व्याख्यान विधि पर निर्भर हैं तथा नवाचारी शिक्षण विधियों का सीमित ही प्रयोग करते हैं। सिंह एवं गुप्ता (2020) ने पाया कि निजी विद्यालयों के शिक्षक, सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोग में अधिक सक्रिय हैं। रेयान एवं डीसी (2017) के अनुसार, सहयोगात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करने वाला शिक्षण व्यवहार छात्रों की आंतरिक प्रेरणा एवं संतुष्टि को बढ़ाता है। प्रभाविकता के संदर्भ में, हेट्टी (2015) के प्रभावशाली मेटा-विश्लेषण में शिक्षक प्रभाविकता को छात्र उपलब्धि का सर्वाधिक प्रबल भविष्यवक्ता पाया गया। शर्मा (2018) ने अपने शोध में अनुभव एवं नियमित प्रशिक्षण को प्रभाविकता के महत्त्वपूर्ण निर्धारक बताया। हॉल एवं लैंगटन (2006) के अनुसार, प्रभावी शिक्षकों में उच्च व्यावसायिक प्रतिबद्धता तथा छात्रों से सकारात्मक अपेक्षाएँ रखने का गुण विशेष रूप से पाया जाता है।

इन दोनों चरों के अंतर्संबंध पर गगनदीप कौर (2021) के अध्ययन में पंजाब के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार एवं प्रभाविकता के बीच उच्च सकारात्मक सहसंबंध (r=0.72) पाया गया। जैन (2016) ने निष्कर्ष दिया कि लोकतांत्रिक एवं छात्र-केंद्रित शिक्षण व्यवहार शिक्षक की प्रभाविकता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। वहीं वर्मा (2017) ने पाया कि अत्यधिक नियंत्रणकारी या निरंकुश शिक्षण व्यवहार प्रभाविकता के साथ नकारात्मक संबंध रखता है।

उपर्युक्त समीक्षा से स्पष्ट है कि शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभाविकता दोनों ही शैक्षिक शोध के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं। किंतु उत्तर प्रदेश के किसी मध्यम आकार के शहर (जैसे बरेली) के विशिष्ट संदर्भ में, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर, इन दोनों प्रमुख चरों के बीच संबंधों का गहन अध्ययन एक शोध अंतराल प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध इसी अंतराल को भरने का एक विनम्र प्रयास है।

शोध पद्धति

यह अध्ययन सहसंबंधात्मक शोध प्रारूप (Correlational Research Design) पर आधारित है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य दो प्राकृतिक रूप से विद्यमान चरों (शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभाविकता) के बीच संबंध की दिशा एवं परिमाण का पता लगाना है। साथ ही, विभिन्न उप-समूहों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण भी किया गया है। अध्ययन की जनसंख्या बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों (सरकारी, सहायता प्राप्त एवं निजी) में कार्यरत शिक्षक (कक्षा 9-12) हैं। स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन (Stratified Random Sampling) विधि द्वारा नमूना चुना गया। सर्वप्रथम विद्यालयों को उनके प्रबंधन के आधार पर तीन स्तरों में विभाजित किया गया। प्रत्येक स्तर से यादृच्छिक रूप से 10-12 विद्यालय चुने गए। इन चुने गए विद्यालयों से लिंग, अनुभव एवं विषय के आधार पर प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करते हुए यादृच्छिक रूप से 5-8 शिक्षक चुने गए। इस प्रकार कुल 250 शिक्षकों के नमूने का लक्ष्य रखा गया, जिसमें से 230 शिक्षकों से प्राप्त पूर्ण एवं वैध प्रतिक्रियाओं का अंतिम विश्लेषण किया गया।

शोध उपकरण:

1. **शिक्षण-व्यवहार प्रश्नावली:** शोधकर्ता द्वारा विकसित एक पंच-सूत्री लिकर्ट प्रकार की प्रश्नावली (हमेशा, अक्सर, कभी-कभी, कभी नहीं, कदापि नहीं)। इसमें पाँच उप-कारक शामिल थे: (क) नियोजन एवं संगठन (8 मद), (ख) प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या (10 मद), (ग) प्रश्नोत्तरी एवं संप्रेषण (7 मद), (घ) मूल्यांकन विधियाँ (6 मद), (ङ) अनुशासन एवं अन्तःक्रिया (7 मद)। कुल 38 मदों वाली इस प्रश्नावली की सामग्री एवं मानदंड वैधता विशेषज्ञों द्वारा स्थापित की गई। इसकी आंतरिक स्थिरता (विश्वसनीयता) क्रोनबैक अल्फा गुणांक **0.87** पाया गया।

2. **शिक्षक प्रभाविकता प्रश्नावली:** कुमार एवं मलिक (2014) द्वारा विकसित प्रश्नावली के अनुकूलित रूप का प्रयोग किया गया। इसमें चार उप-कारक थे: (क)

व्यावसायिक योग्यता (6 मद), (ख) शिक्षण कौशल (8 मद), (ग) व्यक्तिगत गुण (7 मद), (घ) छात्र-संबंध (5 मद)। कुल 26 मदों वाली इस पंच-सूत्री लिकर्ट प्रश्नावली की विश्वसनीयता (क्रोनबैक अल्फा) **0.91** थी।

3. **जनांकिकीय सूचना पत्रिका:** शिक्षकों की व्यक्तिगत पृष्ठभूमि से संबंधित जानकारी (लिंग, आयु, शैक्षणिक योग्यता, शिक्षण अनुभव, विषय, विद्यालय प्रबंधन आदि) एकत्र करने हेतु।

परिणाम एवं विवेचना

इस अध्ययन में कुल 230 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक शामिल थे, जिनमें 58 प्रतिशत पुरुष तथा 42 प्रतिशत महिला शिक्षिकाएँ थीं। विद्यालय प्रबंधन के प्रकार के अनुसार देखा जाए तो 35 प्रतिशत शिक्षक सरकारी विद्यालयों से, 25 प्रतिशत सहायता प्राप्त विद्यालयों से तथा 40 प्रतिशत निजी विद्यालयों से संबद्ध थे।

शिक्षण अनुभव के आधार पर नमूने को तीन वर्गों में विभाजित किया गया—30 प्रतिशत शिक्षक नवीन वर्ग (0–5 वर्ष), 45 प्रतिशत मध्यम अनुभव वर्ग (6–15 वर्ष) तथा 25 प्रतिशत वरिष्ठ वर्ग (15 वर्ष से अधिक) में आते थे। विषयवार वितरण में विज्ञान विषय के शिक्षक सबसे अधिक (40 प्रतिशत) थे, इसके बाद कला (35 प्रतिशत) तथा वाणिज्य (25 प्रतिशत) विषय के शिक्षक शामिल थे।

तालिका : नमूने की जनांकिकीय विशेषताएँ (N = 230)

चर	वर्ग	संख्या	प्रतिशत (%)
लिंग	पुरुष	134	58
	महिला	96	42
विद्यालय प्रबंधन	सरकारी	81	35
	सहायता प्राप्त	58	25
	निजी	91	40
शिक्षण अनुभव	0–5 वर्ष (नवीन)	69	30
	6–15 वर्ष (मध्यम)	104	45
	15+ वर्ष (वरिष्ठ)	57	25
विषय	विज्ञान	92	40
	कला	81	35
	वाणिज्य	57	25

उद्देश्यानुसार विश्लेषण

1. शिक्षण-व्यवहार एवं प्रभावशीलता के संबंध पर पहली परिकल्पना:

"बरेली शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के बीच कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।" दोनों घटकों के बीच संबंध की गहन जाँच के लिए पियर्सन सहसंबंध गुणांक का आकलन किया गया। प्राप्त मान ($r = 0.13$) सांख्यिकीय दृष्टि से नगण्य पाया गया ($p > 0.05$)। दोनों के उप-आयामों के बीच भी कोई मजबूत या सुसंगत संबंध दर्ज नहीं किया गया।

इस आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है। यह परिणाम इस ओर संकेत करता है कि कक्षा में दिखाई देने वाला शिक्षक का बाहरी व्यवहार, उसकी वास्तविक शैक्षिक प्रभावशीलता का विश्वसनीय सूचक नहीं हो सकता। हो सकता है कि प्रभावशीलता शिक्षक की अंतर्निहित अवधारणात्मक दक्षता, व्यक्तिगत लगन या संस्थागत वातावरण जैसे गहरे कारकों से अधिक प्रभावित होती हो।

2. विद्यालय प्रबंधन के आधार पर तुलना से संबंधित दूसरी परिकल्पना:

"निजी विद्यालयों तथा सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार एवं उनकी प्रभाविकता के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।" दोनों प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार तथा प्रभाविकता के औसत स्कोर की तुलना t-परीक्षण के माध्यम से की गई। शिक्षण-व्यवहार के लिए प्राप्त t-मान 1.45 ($p > 0.05$) तथा प्रभाविकता के लिए 0.89 ($p > 0.05$) था, जो दोनों ही स्थितियों में सांख्यिकीय रूप से महत्त्वहीन हैं।

अतः यह परिकल्पना भी स्वीकार की जाती है। यह निष्कर्ष उस रूढ़िवादी धारणा के विपरीत है जो अक्सर निजी विद्यालयों के शिक्षकों को शैक्षणिक दृष्टि से अधिक प्रभावी मानती है। अध्ययन बताता है कि संसाधनों की उपलब्धता में भिन्नता के बावजूद, दोनों ही क्षेत्रों के शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में समान दक्षता एवं प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

3. शिक्षण अनुभव एवं प्रभावशीलता के संबंध पर तीसरी परिकल्पना:

"अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की प्रभाविकता, कम अनुभव वाले शिक्षकों की प्रभाविकता में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है।" अनुभव के तीन स्तरों (नवीन, मध्यम, वरिष्ठ) पर शिक्षकों की प्रभाविकता का विचरण विश्लेषण (ANOVA) किया गया। प्राप्त F-मान 0.92 सांख्यिकीय रूप से महत्त्वहीन पाया गया ($p > 0.05$)। किसी भी दो समूहों के बीच सार्थक अंतर नहीं मिला।

इस आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है। यह तथ्य इस सामान्य मान्यता को चुनौती देता है कि शिक्षण के वर्ष सीधे तौर पर बेहतर शिक्षण कौशल में तब्दील होते हैं। संभवतः नवीन शिक्षक अपने ताज़ा ज्ञान एवं उत्साह से, जबकि वरिष्ठ शिक्षक अपने गहन अनुभव से, छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को समान रूप से प्रभावित करने में सक्षम होते हैं।

4. विषय के आधार पर शिक्षण-व्यवहार की तुलना से संबंधित चौथी परिकल्पना:

"विज्ञान, कला एवं वाणिज्य विषय के शिक्षकों के शिक्षण-व्यवहार में तुलनात्मक रूप से कोई अन्तर नहीं है।" तीनों विषय-समूहों के शिक्षण-व्यवहार के औसत स्कोर की तुलना के लिए ANOVA का प्रयोग किया गया। प्राप्त F-मान 1.21 ($p > 0.05$) महत्त्वहीन पाया गया। शिक्षण के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि पाठ प्रस्तुतीकरण या कक्षा प्रबंधन में भी विषय के आधार पर कोई विशिष्ट भिन्नता नहीं देखी गई।

परिणामों के अनुसार यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इससे ज्ञात होता है कि विषय की प्रकृति चाहे जो भी हो, उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के मूल शिक्षण व्यवहार में आश्चर्यजनक समानता है। यह शिक्षण की कुछ मूलभूत एवं सार्वभौमिक कुशलताओं की ओर इशारा करता है जो सभी विषय-क्षेत्रों में समान रूप से प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

बरेली शहर के संदर्भ में किए गए इस अध्ययन के संशोधित विश्लेषण से कई महत्त्वपूर्ण एवं कुछ हद तक अप्रत्याशित संकेत प्राप्त हुए हैं। सबसे प्रमुख निष्कर्ष यह है कि शिक्षक की प्रभावशीलता का उसके दिखावटी शिक्षण व्यवहार से कोई प्रत्यक्ष एवं मजबूत संबंध नहीं दिखाई देता। इसी प्रकार, विद्यालय का

प्रकार या शिक्षक के अनुभव के वर्ष भी उसकी प्रभावशीलता के निर्णायक सूचक प्रतीत नहीं होते। साथ ही, विभिन्न शैक्षणिक विषयों के शिक्षकों के कार्य-व्यवहार में भी कोई खास भिन्नता नहीं पाई गई।

इन निष्कर्षों का सैद्धांतिक महत्त्व यह है कि ये शिक्षण की गुणवत्ता को समझने के लिए केवल बाहरी एवं दृश्यमान कारकों पर निर्भर रहने की सीमाओं को उजागर करते हैं। व्यावहारिक निहितार्थ के रूप में, यह अध्ययन शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन एवं समर्थन की नीतियों पर पुनर्विचार का आह्वान करता है। भविष्य के हस्तक्षेपों को शिक्षक के सतही व्यवहार से आगे बढ़कर, उनकी शैक्षणिक सोच, विषय की गहरी समझ तथा छात्रों के साथ बनने वाले संवादात्मक संबंधों जैसे गुणात्मक पहलुओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

ग्रन्थसूची (References)

- चौहान, एस. एस. (2019). माध्यमिक स्तर पर शिक्षण विधियों में नवाचार: एक अध्ययन. *शिक्षा और समाज*, *15*(2), 45-58.
- जैन, पी. (2016). शिक्षक का शिक्षण व्यवहार एवं कक्षा संप्रभुता. *भारतीय शिक्षा जर्नल*, *22*(1), 33-47.
- कुमार, वी., एवं मलिक, आर. (2014). शिक्षक प्रभाविकता मापनी: निर्माण एवं मानकीकरण. *मापन और मूल्यांकन*, *8*(3), 12-20.
- शर्मा, आर. के. (2018). अनुभव एवं प्रशिक्षण का शिक्षक प्रभाविकता पर प्रभाव. *शैक्षिक प्रबन्धन और नवाचार*, *5*(4), 112-125.
- सिंह, आर., एवं गुप्ता, एस. (2020). सरकारी एवं निजी विद्यालयों में प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण: एक तुलनात्मक अध्ययन. *शिक्षा प्रौद्योगिकी शोध*, *11*(1), 29-41.
- वर्मा, के. एल. (2017). शिक्षक नेतृत्व शैली एवं विद्यालय प्रभाविकता. *भारतीय शैक्षिक समीक्षा*, *19*(2), 67-79.
- Hall, B., & Langton, B. (2006). *Perceptions of the characteristics of effective teachers*. Annual Meeting of the American Educational Research Association.
- Hattie, J. (2015). The applicability of visible learning to higher education. *Scholarship of Teaching and Learning in Psychology*, *1*(1), 79–91. https://doi.org/10.1037/stl0000021
- Kaur, G. (2021). A correlational study of teaching behaviour and effectiveness of secondary school teachers in Punjab. *International Journal of Educational Research and Development*, *10*(2), 88-102.
- Ryan, T. G., & Deci, E. L. (2017). *Self-determination theory: Basic psychological needs in motivation, development, and wellness*. Guilford Publications.

Corresponding Author: Renu Bahukhandi
E-mail: renubahukhandi2010@gmail.com
Received 4 October 2024; Accepted 25 October 2024. Available online: 30 October, 2024
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License